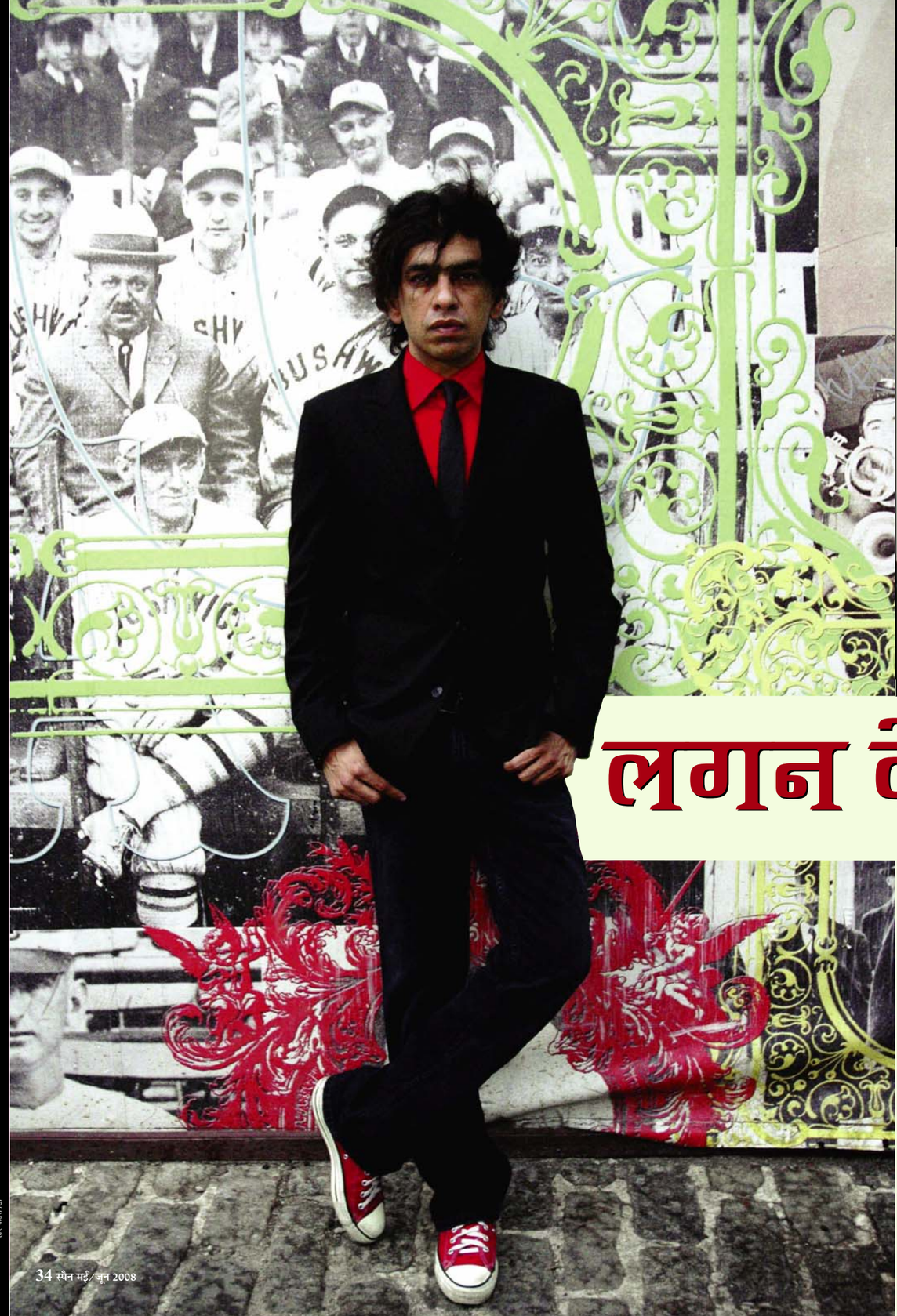

हरि कटगडा

बाएं: नुसरत दुर्रानी, नीचे: अफ़शान दुर्रानी

मोहम्मद जफर / स्पैन इंडिया

# लगन के बूते पाई मंज़िल

दीपांजली काकाती

**पति संगीत प्रेमी हैं, जबकि पत्नी कला और फ़ैशन की रसिया। अपने खास अंदाज़ से यह युगल एक ऊंचा मुकाम हासिल कर चुका है।**

भारत से दुबई होते हुए न्यू यॉर्क पहुंचे एमटीवी अधिकारी नुसरत दुर्रानी और उनकी फ़ैशन डिज़ाइनर पत्नी अफ़शान के लिए चुनौतियां ढूंढना और अपने शौकों को पूरा करना उनके व्यावसायिक जीवन की पूर्णता का स्थायी अंग रहा है।

नुसरत दुर्रानी आज की महत्वपूर्ण मनोरंजन कम्पनी एमटीवी डॉट कॉम की स्थापना करने वाले दल के सदस्य रहे हैं। एमटीवी नेटवर्क्स को डिज़िटल दुनिया में लाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्ष 1996 में एमटीवी नेटवर्क्स में शामिल होने के बाद से वह सभी एमटीवी म्यूज़िक वेबसाइट को ई-कॉमर्स सक्षम बनाने के काम से जुड़े रहे हैं।

एमटीवी वर्ल्ड के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट और महाप्रबन्धक के रूप में वह 2005 में अमेरिका में दक्षिण एशियाई समुदाय की रुचियों के अनुरूप गढ़े गए खास चैनल एमटीवी देसी के योजनाकारों में से एक रहे। वह कहते हैं, ''चैनल अमेरिका में युवा देसी समुदाय के अपना मुकाम पा लेने का प्रतीक था। हमने युवा दक्षिण एशियाइयों को खुद को अभिव्यक्त करने, अपनी संस्कृति पर गर्व करने और अमेरिका में एशियाई क्रांति का हिस्सा बनने के लिए एक जगह दी। हम भारतीय मूल के सैकड़ों ऐसे कलाकारों को सामने लाए हैं जिन्हें मुख्यधारा मीडिया नज़रंदाज़ करता रहा था।''

एमटीवी देसी के बाद अमेरिका में एशियाई दर्शकों के लिए दो और चैनल शुरू हुए, दिसम्बर 2005 में एमटीवी-ची और जून 2006 में एमटीवी-के। फ़रवरी 2007 में एमटीवी वर्ल्ड चैनलों का प्रसारण बन्द कर दिया गया लेकिन इन्हें अलग प्रारूपों में फिर से शुरू किया जाएगा।

सच तो यह है कि एमटीवी वर्ल्ड के अनुभव ने दुर्रानी को उनकी नई और शायद सबसे महत्वाकांक्षी परियोजना शुरू करने की प्रेरणा दी। उनके नेतृत्व में एक दल एमटीवी की व्यापक अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति का उपयोग इसके पहले

वैश्विक पॉप कल्चर नेटवर्क की स्थापना के लिए करेगा। वह कहते हैं, ''नई परियोजना का दर्शक वर्ग दो संस्कृतियों में रचे-बसे लोग होंगे... जैसे ब्रिटेन, अमेरिका या अन्य देशों में रह रहे भारतीय मूल के युवा।'' इस वर्ष के अंत तक दर्शकों के लिए इसका ऑनलाइन परीक्षणात्मक प्रसारण शुरू किया जाएगा।

वर्ष 2007 में नुसरत दुर्रानी को अपने कार्यक्षेत्र में शीर्ष पर पहुंच चुके किसी व्यक्ति को दिया जाने वाला न्यू यॉर्क स्थित एशियन अमेरिकन बिज़नेस डवलपमेंट सेंटर का पिनैकल अचीवमेंट अवार्ड प्राप्त हुआ। इसी वर्ष उन्हें साउथ एशियन्स इन मीडिया एंड मार्केटिंग एसोसिएशन का ट्रेलब्लेज़र ऑफ़ द इयर सम्मान भी मिला।

नुसरत की पत्नी अफ़शान दुर्रानी फ़र्निशिंग और अपहॉल्स्ट्री के लिए उच्च गुणवत्ता वाले कपड़ों की उत्पादक कम्पनी लॉस्ट सिटी प्रॉडक्ट्स की मालिक और क्रिएटिव डायरेक्टर हैं। मुगल कला, स्थापत्य के नमूनों, साहित्य, कविता, जापान के सारासातिक छापों और 20वीं सदी के शुरुआती दौर के ऑस्ट्रियाई कलाकारों और डिज़ाइनरों से प्रेरित ये उत्पाद उनके न्यू यॉर्क, लॉस एंजिलिस, शिकागो और डैलस स्थित शोरूमों में बिकते हैं।

नुसरत लखनऊ, उत्तर प्रदेश के हैं और अफ़शान कश्मीर की। रिश्तेदार होने के नाते उनकी मुलाकातें अक्सर होती थीं और उनके माता-पिता मज़ाक-मज़ाक में कहते भी थे कि बड़े होने पर दोनों की शादी कर दी जाएगी। लखनऊ विश्वविद्यालय की स्नातक अफ़शान हंसती हैं,''और देखिए मज़ाक सच हो गया।''

मोहम्मद जाफर, स्पैन इंडिया

*लॉस्ट सिटी के लिए हाथ की कसीदाकारी वाला कपड़ा तैयार करने हेतु अफ़शान दुर्रानी बहुत-सी चीज़ों से प्रेरणा लेती हैं।*

उनकी सात बरस की बेटी लैला खुद को विश्व नागरिक मानती हैं। वह हिंदी और अंग्रेजी बोलती है और हर गर्मियों में लखनऊ आते रहने के कारण उर्दू पढ़ और लिख लेती है। नुसरत बताते हैं, ''न्यू यॉर्क में लैला की दो पालतू सुनहरी मछलियां हैं- कैट और माउस। लखनऊ वाले घर में उसने कई खरगोश, पंछी और मछलियां पाले हुए हैं। आजकल राइलो काइली उसका पसंदीदा संगीत है।''

लखनऊ विश्वविद्यालय से एमबीए करने के बाद नुसरत ने पहलेपहल नई दिल्ली में यू.पी. इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड, अपट्रॉन में नौकरी की। फिर 1990 में वह होंडा मोटरकार कंपनी के मार्केटिंग प्रबन्धक बनकर दुबई चले गए। वह कहते हैं, ''दुबई में पांच साल बिताने के बाद मैं और अफ़शान बेचैन थे और कला, संगीत और फ़ैशन के अपने शौक को बड़े स्तर पर ले जाना चाहते थे।'' और वे अपनी आरामदायक और तय ज़िंदगी को जारी रखने का मोह छोड़कर 1995 में न्यू यॉर्क चले आए और दोनों ने फिर से पढ़ाई शुरू की।

नुसरत ने न्यू यॉर्क इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी से कम्युनिकेशन में एम.ए. किया और अफ़शान ने फ़ैशन इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी में दाखिला ले लिया। नुसरत और लैला अमेरिकी नागरिक हैं जबकि अफ़शान अब भी भारतीय नागरिक हैं।

नुसरत का एमटीवी से जुड़ना बहुत सहज था। वह भारतीय शास्त्रीय संगीत, पॉप, रॉक, फ़िल्मी संगीत सुनते पले-बढ़े थे और संगीत उनके लिए भोजन-पानी जैसा ही ज़रूरी था। वह याद करते हैं,''मैंने एमटीवी पहली बार दुबई में देखा और उसकी रचनात्मकता ने मुझे चकित कर दिया।'' लेकिन एमटीवी में नौकरी आसानी से नहीं मिली, ''वे सोचते थे कि मुझे अमेरिकी पॉप संस्कृति के बारे में कुछ नहीं पता।''

पति सफलता की सीढ़ियां चढ़ रहे थे तो पत्नी भी पीछे कहां थीं- वह सदियों पुराने तरीकों का इस्तेमाल कर आधुनिक अभिरुचि को भाने वाले कपड़े तैयार करने की प्रक्रिया पर काम कर रही थीं। वर्ष 2002 में उन्होंने लॉस्ट सिटी की स्थापना की। लॉस्ट सिटी सैंकड़ों वर्षों पुरानी तकनीक के सहारे फ़ैब्रिक तैयार करती है लेकिन इसके डिज़ाइन आधुनिक ही होते हैं। अपने उपक्रम के बारे में अफ़शान बताती हैं, ''मुगल काल, यूरोप के रिनैसां यानी पुनर्जागरण के युग के समानांतर था, कला इतिहास के संदर्भ में यह बेहद समृद्ध था। हमने तो इसके छोटे से हिस्से को भी नहीं छुआ है। हमारी रुचि उन्हीं चीज़ों को दोबारा प्रस्तुत करने में नहीं है जिनके लिए भारत पहले से ही विख्यात है। हमारे उत्पादन अंतरराष्ट्रीय पसन्द के अनुरूप हैं।''

लखनऊ में करीब 100 कारीगर उनके लिए कपड़े तैयार करते हैं। पहले धागे की रंगाई हाथ से होती है और ट्रेसिंग पेपर के जरिये डिज़ाइन बनाए जाते हैं। डिज़ाइन की जटिलता के हिसाब से इस काम में एक हफ़्ता तक लग जाता है। इसके बाद इस डिज़ाइन की सुई के जरिये खुदाई होती है। इस छिद्रित डिज़ाइन को लकड़ी के फ्रेम पर लिपटे कपड़े पर छापा जाता है। इसके बाद कारीगर इस फ्रेम के चारों ओर बैठकर डिज़ाइन पर कसीदाकारी का काम करते हैं।

अमेरिकी ग्राहक डिज़ाइनों को देखते ही कहते हैं, ''यह इतना सुन्दर काम सचमुच हाथ से ही हुआ है?'' अफ़शान सोच में खो जाती हैं,''जब कारीगर किसी चीज़ में अपना दिल और हुनर डाल दे तो खूबसूरती तो आएगी ही।''

यह पूछे जाने पर कि क्या ग्राहकों को भारतीय डिज़ाइन के परम्परागत अजब-गजब पक्ष से आगे देखने को राजी कर पाना कठिन है, अफ़शान कहती हैं, ''नहीं- भारत में नाचते हाथी-घोड़ों और अगरबत्तियों के अलावा भी बहुत कुछ है। हमारे देश की छवि और उसकी वास्तविकता को दुनिया के सामने लाने के लिए पहलकदमी तो हम भारतीयों को ही करनी होगी।''

कढ़ाई की लुप्त होती कला को पुनर्जीवित कर रहे उनके उत्पाद व्यावसायीकरण और आधुनिकीकरण की भेंट चढ़ रही तमाम परम्पराओं को एक श्रद्धांजलि हैं, हाल ही में शुरू हुई उनकी कम्पनी की वेबसाइट (http://lostcityproducts.com) उनके दर्शन को प्रतिबिम्बित करती है - एक समृद्ध वस्त्र संग्रह और हर डिज़ाइन से जुड़ी कहानियां जो प्राचीन अफगान कवि और शहज़ादी राबेया बल्खी से शुरू होकर पंक रॉकर निक केव तक जुड़ती हैं।

हमने पूछा कि दुर्रानी और उन्हीं जैसे भारतीय मूल के अन्य लोगों के लिए अमेरिका में अपनी छाप छोड़ना कैसे सम्भव हुआ? अफ़शान कहती हैं, ''दक्षिण एशियाई लोग काम करने में कभी पीछे नहीं रहते, उनके पास सपने हैं, उन्हें पूरा करने की हिम्मत और चाहत है, और हज़ारों बरस पुरानी विरासत है। उन्हें आगे बढ़ने से कौन रोक सकता है? भारत की ही तरह अमेरिका भी एक महान देश है जो आपको अपनी क्षमता की तलाश करने देता है।''

*कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।*